विषय सूची

· अध्याय 1: जीवन परिचय – श्री बजरंग दास जी महाराज

- बचपन व संगीत प्रेम
- कॉलेज जीवन और गायक की पहचान
- TV Shows और 40,000+ लाइव प्रस्तुतियाँ
- कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी से M.A. in Music & Sociology
- 6 बार NET/SLET क्वालिफाइड
- 28 देशों में आध्यात्मिक-सांस्कृतिक दूत के रूप में सेवा

· अध्याय 2: श्री बजरंग बाला जी दरबार की स्थापना

- व्यापारिक जीवन से मोक्ष की ओर
- श्री हनुमान जी की कृपा से दरबार की शुरुआत
- साधना, भक्ति और परम आदेश

· अध्याय 3: श्री बजरंग बाला जी दरबार का साहित्य

- श्री बजरंग वाणी
- श्री महिमा, श्री प्रार्थना
- जीवन दर्शन के पद, दोहे व व्याख्या

· अध्याय 3: श्री बजरंग बाला जी दरबार का साहित्य

- श्री बजरंग वाणी
- श्री महिमा, श्री प्रार्थना
- जीवन दर्शन के पद, दोहे व व्याख्या

अध्याय 4: गुरु की महिमा और सेवा पद्धति

- संगत की सेवा
- बाल संगत व संस्कार
- निःशुल्क सेवा, अहंकारमुक्त कार्यप्रणाली

· अध्याय 5: भक्तों के अनुभव और चमत्कार

- रोगमुक्ति, मन की शांति
- जीवन की दिशा में परिवर्तन
- गुरु कृपा के सत्य अनुभव

अध्याय 6: अंतरराष्ट्रीय प्रचार व प्रभाव

- यूट्यूब, पॉडकास्ट, वेबसाइट
- विदेशों में संगत
- भक्तों का आध्यात्मिक जुड़ाव

परिचय

यह पुस्तक केवल एक लेखक की अभिव्यक्ति नहीं है, यह एक प्रेरणा है – श्री हनुमान पिताजी की, जिन्होंने श्री कुलवंत सिंह भट्टी जी महाराज के माध्यम से 53 वर्षों तक श्रीराम की लीलाओं को जीवंत किया। यह वही भक्ति है, जिसने एक सिख भक्त को हनुमान स्वरूप में विलीन कर दिया। उनकी निस्वार्थ सेवा, रामलीला में हनुमान जी का जीवंत रूप, और निष्कलंक समर्पण ही वह आधारशिला है, जिस पर यह सम्पूर्ण आध्यात्मिक यात्रा आरंभ होती है।

यह पुस्तक समर्पित है उन सभी आत्माओं को, जिन्होंने भक्ति को केवल शब्द नहीं, जीवन का मार्ग बनाया है।

यह पुस्तक संगत माता को अर्पित है — क्योंकि संगत इस दरबार में केवल भक्त नहीं, माता के रूप में वंदनीय है, जो अपने हृदय से श्रीराम नाम को धारण करती है, सेवा में लीन रहती है, और श्री हनुमान जी की छाया में अपने जीवन को समर्पित करती है।

यह पुस्तक एक कृपा की अभिव्यक्ति है, जो प्रभु श्री हनुमान जी और श्रीराम जी के असीम आशीर्वाद के रूप में मेरे जीवन में उतरती गई, और जिसका उद्देश्य मात्र यही है — कि जो कुछ भी

प्रभु ने अनुभव रूप में दिया, उसे शब्दों में समर्पित कर दूँ उन लोगों को, जो भक्ति, सेवा और आत्मिक खोज की राह पर हैं।

यह ग्रंथ न तो किसी धर्म का प्रचार है, और न ही किसी विचारधारा की श्रेष्ठता का प्रदर्शन — यह तो भक्ति की गूंज है, जो अंतर्यामी प्रभु की ओर लौटने का मार्ग दिखाती है।

यह पुस्तक केवल श्री बजरंग बाला जी दरबार की यात्रा नहीं, बल्कि हर उस भक्त की यात्रा है जो जीवन में किसी मोड़ पर प्रभु की ओर मुड़ने को तैयार है।

शब्द सीमित हैं, पर कृपा असीम है।
भाषा छोटी है, पर अनुभूति अनंत है।

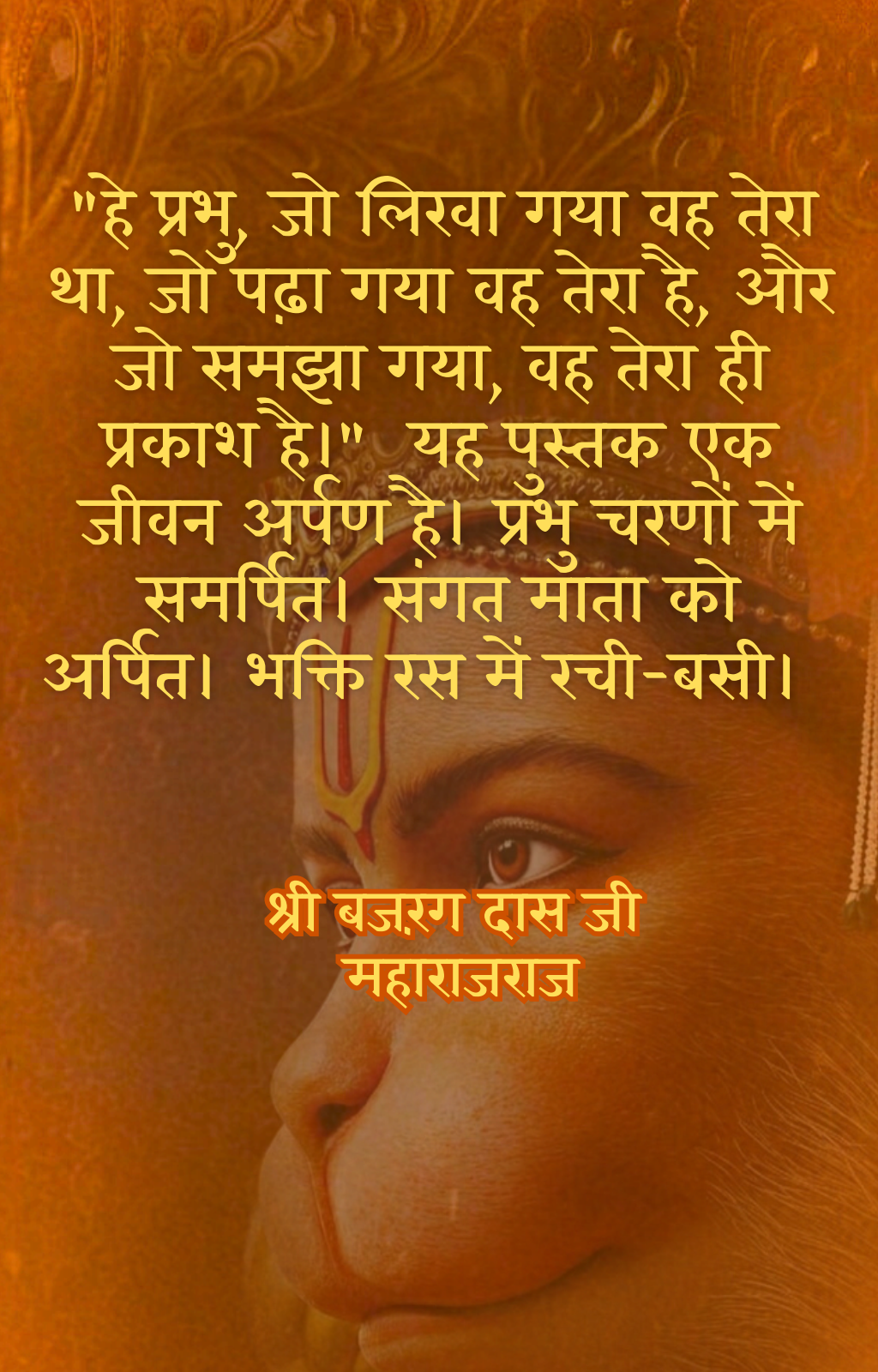

"हे प्रभु, जो लिखा गया वह तेरा था, जो पढ़ा गया वह तेरा है, और जो समझा गया, वह तेरा ही प्रकाश है।" यह पुस्तक एक जीवन अर्पण है। प्रभु चरणों में समर्पित। संगत माता को अर्पित। भक्ति रस में रची-बसी।

श्री बजरंग दास जी
महाराजराज

अध्याय 1:
जीवन परिचय– श्री बजरंग दास जी महाराज

भक्ति की कोख से जन्मा साधक, संगीत से सजी साधना की यात्रा

श्री बजरंग दास जी महाराज का जन्म एक श्रद्धालु और भक्तिपूर्ण सिख परिवार में हुआ। उनके जन्मनाम सरबजीत सिंह को आज संसार “बजरंग दास जी महाराज” के नाम से जानता है — लेकिन इस रूपांतरण के मूल में जो शक्ति है, वह हैं उनके पिता – श्री राम भक्त कुलवंत सिंह भट्टी जी, जिन्हें समाज में “बजरंगी सरदार” के नाम से भी श्रद्धा से पुकारा जाता है।

बचपन से ही कुलवंत सिंह भट्टी जी ने अपने पुत्र को भक्ति की मिट्टी में सींचा।

सुबह स्कूल जाने से पहले और शाम को लौटने के बाद श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ, गुरबाणी का कीर्तन, और धार्मिक आयोजनों में स्वर देना, यह सब बजरंग दास जी महाराज की दिनचर्या का भाग बन चुका था।

यह केवल एक पिता का धर्म नहीं था, यह उस पिता का आध्यात्मिक संस्कार था, जो स्वयं श्रीराम और श्रीहनुमान जी के अनन्य उपासक हैं।

संगीत से आत्मा का साक्षात्कार

संगीत श्री बजरंग दास जी के लिए केवल शौक नहीं था, वह आत्मा की आवाज़ थी।
बचपन से ही उन्हें कविता लिखने, छंद रचने और भक्ति गीत गाने की प्रेरणा मिली।
उनकी लेखनी में जो भाव गूंजते थे, वे केवल शब्द नहीं थे, वे प्रभु से संवाद थे।

उनकी रचनाएं, कविताएं, और गीति-भावनाएं इतनी गहन होती थीं कि श्रोता भावविभोर होकर अश्रुपूरित हो जाते थे।
उनकी आवाज़ में कंपन नहीं, कृपा का स्पर्श होता था।
इसका प्रमाण आज भी YouTube और सोशल मीडिया पर सुना-देखा जा सकता है।

शिक्षा और गायक के रूप में पहचान

श्री बजरंग दास जी महाराज ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से संगीत (Music) और समाजशास्त्र (Sociology) में पोस्ट ग्रेजुएशन किया। इसके साथ उन्होंने 6 बार UGC-NET/JRF परीक्षा उत्तीर्ण की — जो उनकी शैक्षणिक दक्षता का प्रतीक है।

उनके मार्गदर्शन में सैकड़ों छात्रों ने NET/SLET जैसी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की।

गायन के क्षेत्र में उन्होंने 40,000 से अधिक लाइव प्रस्तुतियाँ दीं, जिनमें से अधिकतर आध्यात्मिक और सूफियाना गायन आधारित थीं।

अंतरराष्ट्रीय भक्ति यात्रा

श्री बजरंग दास जी महाराज ने 28 देशों में जाकर भारत की भक्ति परंपरा, राम नाम की महिमा और सूफियाना संगीत का प्रचार किया।

इनमें प्रमुख देश थे – रोमानिया, रूस, बेलारूस, ईरान, यूक्रेन, दुबई, मलेशिया, इटली, इंग्लैंड, कनाडा, अमेरिका आदि।

उन्होंने वहाँ के सांस्कृतिक और शैक्षणिक वातावरण को आत्मसात किया और भारतीय आध्यात्मिकता को विश्व स्तर पर सादगी और भक्ति के साथ प्रस्तुत किया।

उपसंहार: जीवन से अध्यात्म की ओर

यह यात्रा केवल कला और प्रसिद्धि तक सीमित नहीं रही। जैसे-जैसे आत्मा गहराई से प्रभु की ओर बढ़ी, वैसे-वैसे उन्हें अनुभव हुआ कि उनका जीवन अब केवल संगीत का नहीं, बल्कि सेवा और साधना का है।

प्रभु श्री हनुमान जी की कृपा से उन्हें "बजरंग दास" नाम प्राप्त हुआ, जो केवल एक नाम नहीं, बल्कि एक आत्मिक भूमिका का संकेत था — एक भक्त, एक साधक, और एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक।

अध्याय 2:
श्री बजरंग बाला जी दरबार की स्थापना

"जहाँ साधना मौन होती है, वहाँ स्थापना ईश्वर की प्रेरणा से होती है।"

श्री बजरंग बाला जी दरबार की स्थापना एक साधारण सोच या योजना का परिणाम नहीं थी, यह एक दिव्य संकल्प था — श्री हनुमान जी की सीधी कृपा से प्राप्त आदेश।

इस दरबार की नींव न ईंट-पत्थर से बनी, न धन-दौलत से। इसकी नींव बनी भक्ति, श्रद्धा, सेवा, और त्याग से। यह स्थापना थी उस भक्ति परंपरा की, जिसमें कोई कर्मकांड नहीं, कोई आडंबर नहीं — केवल निष्काम भाव से प्रभु श्रीराम और उनके अनन्य भक्त श्री हनुमान जी के चरणों में समर्पण है।

व्यवसाय से विरक्ति और साधना की ओर मोड़

श्री बजरंग दास जी महाराज उस समय आधुनिक शिक्षा, संगीत और विदेश प्रचार में पूरी तरह सक्रिय थे। जीवन में उपलब्धियाँ, प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त कर चुके थे। लेकिन हृदय में एक खालीपन था — वह खालीपन जिसे केवल प्रभु का प्रेम भर सकता था।

उसी समय जीवन में एक मोड़ आया। प्रभु कृपा से एक दिव्य अनुभव प्राप्त हुआ — जैसे किसी शक्ति ने भीतर से आवाज़ दी कि अब समय है, लौटने का... श्रीराम की ओर।

यही वह समय था जब आंतरिक रूपांतरण हुआ और श्री बजरंग दास जी महाराज ने सबकुछ छोड़कर सेवा और साधना का पथ अपनाया।

प्रभु श्री हनुमान जी की प्रेरणा

दिव्य ध्यान में एक दिन उन्हें अनुभूति हुई कि प्रभु श्री हनुमान जी की ओर से उन्हें एक विशेष कार्य सौंपा गया है।

उन्होंने भीतर से एक आह्वान सुना —

“तुम्हारे माध्यम से एक ऐसा स्थान प्रकट होगा, जहाँ केवल मेरी और मेरे प्रभु श्रीराम की भक्ति का प्रचार होगा — निष्काम, निश्छल और निरंतर।”

यह आदेश कोई कल्पना नहीं था — यह एक जीवंत अनुभव था, जो उनके जीवन की दिशा बदल गया।

दरबार का प्रारंभ: बिना शोर, बिना प्रचार

श्री बजरंग दास जी महाराज ने न तो कोई बड़े मंच बनाए, न बड़े पंडाल, न कोई विज्ञापन दिया, न चंदा माँगा।
उन्होंने केवल एक स्थान चुना, जहां से प्रेम, भक्ति, और नामस्मरण की लहर शुरू हुई।
इस स्थान को नाम दिया गया —

"श्री बजरंग बाला जी दरबार"

यह केवल एक नाम नहीं, एक संघर्षशील आत्मा की साधना की परिणति है।

नियमित संगत और सेवा आरंभ

दरबार में नित्य सुबह और शाम संगत प्रारंभ हुई।
यह संगत कोई तामझाम नहीं रखती केवल राम नाम का जाप, हनुमान चालीसा, प्रभु की वाणी और सच्चे भाव से सेवा।

- दरबार में कोई दक्षिणा नहीं ली जाती।
- कर्मकांड रहित भक्ति का पालन होता है।
- हर भक्त केवल प्रेम और विश्वास से आता है।
- यहाँ कोई बड़ा-छोटा नहीं, केवल भक्त और प्रभु का रिश्ता होता है।

प्रभु की लीला — चमत्कार नहीं, कृपा का साक्ष्य

शुरुआत में जब दरबार की संगत शुरू हुई, तो कुछ ही समय में लोगों को मानसिक शांति, रोगों से मुक्ति, और जीवन में चमत्कारिक बदलाव अनुभव होने लगे।
लोग कहते —
“हमारे जीवन में पहली बार किसी स्थान पर ऐसा अनुभव हुआ, जहाँ केवल प्रेम की ऊर्जा हो।”

यह स्थापना नहीं, प्रकट हुआ दरबार है

श्री बजरंग बाला जी दरबार कोई संस्थान नहीं, यह तो हनुमान जी की एक प्रकट कृपा है।
यह स्थान उन सभी के लिए खुला है —
जो प्रभु की भक्ति को जीवन का आधार मानते हैं,
जो कर्मकांड से दूर, प्रेम में विश्वास रखते हैं,
और जो गुरु को मार्गदर्शक और संगत को माँ समझते हैं।

अध्याय 3: श्री बजरंग बाला जी दरबार का साहित्य एवं "बजरंग वाणी"

जिस तरह गंगा का जल पावन है,
वैसे ही इस दरबार की वाणी जीवन-मुक्ति का साधन है।
यह केवल शब्द नहीं — यह भक्तों के अंत:करण से निकले भाव हैं,
जो हनुमानजी की कृपा से जन्मे हैं और राम भक्ति की धारा बन बहते हैं।

साहित्य का स्वरूप — आत्मा की पुकार

श्री बजरंग बाला जी दरबार का साहित्य भक्तों के हृदय की सच्ची अभिव्यक्ति है।
यह कोई ग्रंथालय में रचा गया साहित्य नहीं, यह तो वही शब्द हैं जो आत्मा के कंठ से गूंजे, जो आँखों के आँसुओं में डूबे, और जो भक्तों की सांसों में रमे।
यह साहित्य साधारण न होकर दिव्य अनुभूति से परिपूर्ण है।
शब्दों में भक्ति है, छंदों में श्रद्धा है, और हर वाणी में हनुमंत महिमा है।

बजरंग वाणी" — वह अमृत जो भक्त को परमात्मा से जोड़ दे

"बजरंग वाणी" इस दरबार की सबसे दिव्य वाणी है।
यह केवल कविता नहीं — यह आंतरिक साधना है।
यह एक ऐसी संगीतमय भक्ति की रचना है, जिसमें

- हनुमान जी की वीरता का वर्णन है
- श्री राम जी की महिमा का गुणगान है
- भक्त और गुरु के बीच की आत्मिक डोर की व्याख्या है
- और वह विवेचना है जो हृदय को भक्ति-रस में डुबो देती है।

🪶 उदाहरण (काव्यांश):

"जहाँ जपे राम नाम, वहाँ घटे पाप का भार,
बजरंग बाला का दरबार, करे भवसागर पार।
भक्ति में डूबे शब्द, जैसे मोती शुद्ध भाव के,
जो पढ़े बजरंग वाणी, मिल जाएँ दर्शन आप के।"

यह वाणी केवल उच्चारण मात्र नहीं है, यह मंत्र है, यह साधना है।
यह वाणी जब संगीतमय रूप में श्री बजरंग दास जी महाराज के मुखारविंद से प्रकट होती है — तब उसकी तरंगें केवल कानों में नहीं, आत्मा में गूंजती हैं।

संगीतमय भक्ति: जब सुरों में बहता है राम नाम

श्री बजरंग दास जी महाराज की लेखनी और गायन, दोनों एक साथ एक गहन आध्यात्मिक यात्रा बनाते हैं।

उनके द्वारा रचित और प्रस्तुत बजरंग वाणी में:

• रागों की मधुरता है
• शब्दों में समर्पण है
• भावों में श्रीराम का नाम है
• और गूंज में श्री हनुमान की शक्ति है।

संगत माँ को समर्पण

हर रचना, हर वाणी, हर गीत — यह सब संगत माँ को समर्पित है।

जिन्होंने दरबार में आकर, अपने आंसुओं से शब्दों को सींचा,
जिन्होंने अपने अनुभवों से इन वाणियों को जीवंत किया,
उन भक्तों की भावनाएं ही इस साहित्य की आत्मा हैं।

🔶 भावों में बहते हुए...

"जहाँ भाव उठे, वहीं शब्द बने,
जहाँ श्रद्धा फूटी, वहीं छंद जमे।
संगत के प्रेम ने शब्दों को गाया,
और प्रभु ने स्वयं उसे अपनाया।"

यह है श्री बजरंग बाला जी दरबार का साहित्य —
न केवल पढ़ने योग्य, बल्कि जीने योग्य।

यह वाणी वह दीपक है जो अंधेरे मन को प्रकाश में बदलती है।

अध्याय 4:
गुरु की महिमा एवं गुरु सेवा पद्धति

“गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय,
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।”
श्री बजरंग बाला जी दरबार में गुरु की महिमा न केवल शब्दों से,
बल्कि सेवा, त्याग और समर्पण से प्रकट होती है।
यह दरबार हमें बताता है कि बिना गुरु के, आत्मा परमात्मा का मार्ग नहीं देख सकती।

गुरु: एक ज्योति, एक पतवार, एक शक्ति

श्री बजरंग दास जी महाराज स्वयं कहते हैं कि उनके जीवन का हर अध्याय —
उनके पिताश्री कुलवंत सिंह भट्टी जी की धार्मिक छाया और
श्री हनुमान जी की कृपा से ही सुशोभित है।
गुरु वह हैं:

- जो शिष्य के भीतर प्रभु की अनुभूति जागृत करें
- जो जीवन में अध्यात्म को साधना बनाएं
- और जो शब्दों से नहीं, अपने आचरण से शिक्षा दें

गुरु सेवा पद्धति: दरबार की आत्मा

श्री बजरंग बाला जी दरबार की सेवा पद्धति अत्यंत व्यवस्थित, विनम्र और विनीत है। यह सेवा कोई कर्मकांड नहीं — यह प्रेम का प्रकटीकरण है।

🪔 सेवा के मुख्य स्तंभ:

1. भाव से सेवा —
2. हर कार्य भावपूर्ण हो, चाहे वह मंदिर की सफाई हो या संगत को जल पिलाना।
3. निज स्वार्थ त्यागकर सेवा —
4. सेवक स्वयं को मिटाकर दरबार की पवित्रता को बढ़ाता है।
5. गुरु की आज्ञा में लीनता —
6. सेवा वही सफल है, जो गुरु के संकेत पर आधारित हो।
7. चुपचाप सेवा —
8. दरबार में सेवा का प्रदर्शन नहीं, समर्पण मूल्यवान होता है।

गुरु भक्ति: केवल आदर नहीं, एक जीवन-नीति

गुरु श्री बजरंग दास जी महाराज के चरणों में जो श्रद्धा से बैठ जाता है, वह न केवल ज्ञान पाता है, बल्कि अपने भीतर एक नई ऊर्जा, नई दिशा, और एक नई दृष्टि पाता है।

📜 एक भावमयी पंक्ति:

"गुरु चरणों में जो रखे शीश,
वह पा ले वो ज्ञान, जो शब्दों से परे है।
जो सेवा को समझे साधना,
वो हर क्षण को प्रभु की पूजा माने।"

🔶 संगत द्वारा सेवा के उदाहरण

- दरबार में भक्तगण समय, श्रम, धन और संगीत के माध्यम से सेवा करते हैं।
- कोई भजन द्वारा सेवा करता है, कोई प्रसाद वितरण में।
- कोई मंच सजाता है, कोई चुपचाप हॉल की सफाई करता है।
- और कई भक्त विदेशों में भी इस सेवा भाव को प्रचारित कर रहे हैं।

गुरु सेवा का फल: आत्मा का परिष्कार

सेवा करने वाला व्यक्ति स्वयं को शुद्ध करता है।
उसका अंतर्मन भक्तिरस से भीगता है।
उसे हनुमंत कृपा सहजता से प्राप्त होती है।

निष्कर्ष:

गुरु की महिमा कोई कथा नहीं, वह स्वयं एक जीवन-दर्शन है।
सेवा कोई रस्म नहीं — वह आत्मा की श्रद्धा का प्रकाश है।
बिना गुरु के ज्ञान अधूरा है,
बिना सेवा के भक्ति अधूरी है,
और बिना समर्पण के कृपा अधर में है।

अध्याय 5:
भक्तों के अनुभव और चमत्कार

जब श्रद्धा सच्ची होती है,
जब हृदय निर्मल होता है,
तो प्रभु स्वयं अपने भक्तों के जीवन में प्रकट होकर
उनकी रक्षा, मार्गदर्शन और उत्थान करते हैं।
श्री बजरंग बाला जी दरबार के हजारों भक्तों ने
ऐसे चमत्कारी अनुभव साझा किए हैं
जिनमें हनुमंत कृपा की झलक
प्रत्यक्ष रूप में महसूस की गई है।

अनुभव 1: रोग से मुक्ति — जब विज्ञान ने मना किया

एक महिला, दिल्ली से, गंभीर असाध्य रोग से पीड़ित थीं।
डॉक्टरों ने कहा: "अब उम्मीद नहीं।"
उन्होंने दरबार में केवल तीन दिन सेवा की,
बजरंग वाणी का पाठ किया, और प्रभु श्री बजरंग बाला जी महाराज की शरण में रोते हुए समर्पण किया।
तीसरे दिन रात में स्वप्न आया —
श्री बजरंग बाला जी ने कहा: "अब डरना नहीं, तु ठीक है।"
सुबह उठते ही उनका शरीर हल्का लगा,
और अगली रिपोर्ट में रोग समाप्त पाया गया।

अनुभव 2: विदेश में भक्त की रक्षा

एक युवक, जो जर्मनी में काम करता था,
एक दिन बहुत ही घातक सड़क दुर्घटना में फंस गया।
गाड़ी पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई, परंतु युवक को खरोंच तक नहीं आई।
वह बताता है:
"मेरे हाथ में श्री बजरंग बाला जी की तस्वीर थी।
एक सेकंड के लिए मुझे लगा जैसे किसी ने
मेरे चारों ओर ढाल बना दी हो।
मैं जानता हूं — वह मेरे बजरंग बाला ही थे।"

अनुभव 3: बच्चा बोलने लगा

एक युवक, जो जर्मनी में काम करता था,
एक दिन बहुत ही घातक सड़क दुर्घटना में फंस गया।
गाड़ी पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई, परंतु युवक को खरोंच तक नहीं आई।
वह बताता है:
"मेरे हाथ में श्री बजरंग बाला जी की तस्वीर थी।
एक सेकंड के लिए मुझे लगा जैसे किसी ने
मेरे चारों ओर ढाल बना दी हो।
मैं जानता हूं — वह मेरे बजरंग बाला ही थे।"